चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

1 से 15 जुलाई, 2024 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

सस्य क्रियाएँ

- अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग यूरिया प्रति एकड का छिड़काव़ करें । अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी की बिजाई करें देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। हर बरसात या पानी लगाने के बाद कपास में निराई गुड़ाई अवश्य करें। अच्छी बरसात हो तो कपास में से पानी की निकासी का प्रबंध करें।

रोग प्रबंधन

- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें ।
- जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।
- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।
- फसल की लगातार निगरानी रखें व प्रारंभ में पत्ती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

कीट प्रबंधन

- जिन किसान भाइयों की नरमा की फसल के आसपास पिछले साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले भी एवं अधिक होता है।
- गुलाबी सुण्डी अदखिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर 'भंडारित लकड़ियों' में निवास करती है, इसलिए बनछटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं पत्तें झाड़कर नष्ट कर दें।
- फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुण्डी से ग्रसित फूलों एवं रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) आदि को एकत्रित कर नष्ट करें।
- गुलाबी सुंडी के प्रकोप की निगरानी अपने खेतों में लगी फसल के 40–45 दिनों की होने के बाद लगातार करें। इसके लिए गुलाबी सुंडी के 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को ३ दिनों के अंतराल पर गिनती करें।
- जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12–15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तथा फसल में बौकी/डोडी एवम् फूल लगने शुरू हो गये हो तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।

इसके लिए एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें।

- इसके अतिरिक्त अपनी फसल में कम से कम 100 फूलों का गुलाबी सुंडी के लिए निरिक्षण करें। टिन्डे बनने के बाद गुलाबी सुंडी ज्यादातर टिंडों में पाई जाती है। अतः एक एकड़ से 20 - 25 टिन्डे (12–15 दिन पुराने) तोड़कर टिंडो को फाड़कर निरिक्षण करें।
- कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों (फूल एवम् टिंडो) पर 5–10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ. की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 12–15 दिनों बाद करें।
- जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा का प्रकोप होता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें तथा इसके बाद रासायनिक कीटनाशक अगर गुलाबी सुंडी के लिए प्रयोग किया गया हो तो थ्रिप्स का भी नियंत्रण हैं।
- जुलाई माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का भी प्रकोप शुरू हो जाता हैं इसलिए इनकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रत्ति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।
- कपास की शुरुआती अवस्था में ज्यादा जहरीले कीटनाशकों एवं कीटनाशकों के टैंक मिश्रण का प्रयोग ना करे ऐसा करने से मित्र कीटों की संख्या कम हो जाती है तथा रस चूसने वाले कीड़ों की समस्या बढ़ने लगती है।

अन्य सलाह

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।

इसके अतिरिक्त कोई भी संशय होने पर निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9992911570 8901047834

कपास अनुभाग

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय हिसार